भाटापारा

बार-बार आशिकसे गर्भघारण करने वाली पत्नी की हत्या का चर्चित मामला

यह कैसा प्यार

20 अगस्त की सुबह भाटापारा एसडीओपी तारेश साहू के कार्यालय में पास के गांव से आए एक दंपति ने अपनी विवाहित बेटी संगीता के लापता होने की जानकारी दी। दंपति की पूरी बात सुनकर एसडीओपी श्री साहू ने दोनों को ग्रामीण थाना भेज दिया जहां प्रभारी एसआई हेमसागर सिधार ने मामला दर्ज कर पूछताछ की तो माता-पिता ने धुर्राबाधा गांव में रहने वाले बेटी के पति संजू निषाद पर हत्या का शक जाहिर किया।

संगीता के हाथ पर बने इसी टेटू से हुई थी शव की पहचान।

जब संजू को थाने बुलाकर उससे पूछताछ की गई तो संजू ने बताया कि साहब मेरी पत्नी कुछ माह पहले अपने पुराने प्रेमी के साथ भागने के बाद खुद वापस आ गई थी। इसलिए मेरे ऊपर आरोप गलत है संगीता फिर अपने यार के साथ भागी होगी। संगीता के माता-पिता ने भी स्वीकार किया कि वो कुछ समय पहले पति को छोड़कर भाग चुकी है।

तारेश साहू,एसडीओपी

इसी बीच पांच दिन बाद पचपेड़ी थाना इलाके में शिवनाथ नदी से एक महिला की लाश बरामद हुई जिसके हाथ पर बने टेटू से उसकी पहचान संगीता निषाद के रूप हो गई। चूंकि हाथ-पैर बंधी लाश बोरी में बंद थी और उसके शरीर पर चाकू के निशान थे इसलिए शक के आधार पर पुलिस ने उसके पति संजू को हिरासत में लेकर उससे शक्ति से पूछताछ की तो संजू ने अपना अपराध स्वीकार करते हुए पूरी कहानी सुना दी।

संजू ने बताया कि पास के गांव की रहने वाली संगीता से उसकी मुलाकात सोशल मीडिया पर अगस्त 2024 में हुई थी। हम दोनों में दोस्ती होने के बाद जल्द ही प्यार हो गया जिससे हम लोग गांव के बाहर मिलने भी लगे थे। इस दौरान दो-चार मुलाकातों के बाद संगीता ने मुझे अपने गर्भवती होने की खबर दी। उसका कहना था कि वो मेरे बच्चे की मां बनने वाली है। वह साफ झूठ बोल रही थी कि बच्चा मेरा है क्योंकि हमारे बीच शारीरिक रिश्ते नहीं बने थे ऐसे में बच्चा मेरा कैसे हो सकता था। इसके बावजूद उसने मुझसे मंगवाकर दवा खाकर बच्चा गिरा दिया फिर वह मुझसे शादी करने की जिद करने लगी। ऐसी स्थिति में मैं उससे शादी नहीं करना चाहता था लेकिन जब उसने बहुत जबरदस्ती की तो उसके उम्र में एक साल बड़ा होने के बाद भी और उसके गर्भवती होने की जानकारी होने पर भी दिसंबर 24 में हमने प्रेम विवाह कर लिया।

हमारी इस शादी से मेरे घर वाले खुश नहीं थे लेकिन बाद में उन्होंने संगीता को स्वीकार कर लिया लेकिन वह जल्द ही मुझसे लड़ने झगड़ने लगी। और एक रोज घर से भाग गई। संगीता के भागने पर मैं ससुराल पहुंचा लेकिन वह वहां भी नहीं थी इससे मैं समझ गया कि वो अपने उसी प्रेमी के साथ भागी होगी जिसका बच्चा उसके पेट में आया था। इससे गांव भर में मेरी हंसी हो रही थी लेकिन मैं खून का घूट पीकर रह गया। धीरे-धीरे संगीता के भागने की बात पुरानी होने लगी लेकिन इसी बीच एक रोज वह मेरे घर वापस आ गई। मैं उसे वापस साथ नहीं रखना चाहता था लेकिन माता-पिता नहीं माने और उसकी गलती माफ करके घर में रख लिया।

पत्नी की बदनामी न हो इसलिए मैंने माता-पिता को उसके शादी से पहले गर्भवती होने वाली बात तब भी नहीं बताई लेकिन इसके बाद मैंने एक कमरे में साथ रहने के बावजूद कभी भी संगीता से संबंध नहीं बनाए क्योंकि अब मुझे उससे नफरत होने लगी थी।

घर में हमारे बीच आई इस दूरी की जानकारी किसी को नहीं थी। इसलिए बाहर से सब कुछ सामान्य चलता रहा। लेकिन इसी बीच घर वापस आने के चार महीने बाद संगीता की तबियत खराब होने पर मां उसे अस्पताल लेकर गई जहां से खुश होकर लौटी मां ने बताया कि मैं वाप बनने वाला हूं। यह सुनते ही ऐसे लगा जैसे किसी ने पिघला सीसा मेरे काल में उड़ेल दिया हो। क्योंकि एक बार फिर संगीता अपने प्रेमी से गर्भवती होकर वापस घर आई थी। इस बच्चे को गिराया भी नहीं जा सकता था क्योंकि ऐसा करने पर घर में बताना पड़ता की बच्चा मेरा नहीं है और पहले भी संगीता को ऐसा हो चुका है। अब मुझे चिंता होने लगी कि संगीता का पाप जिंदगी भर मुझे पालना पड़ेगा और किसी दूसरे का बेटा मेरी जायजाद का हकदार होगा। इस बात को लेकर मेरे और संगीता के बीच में विवाद होने लगा। लेकिन वह अपने गर्भ को मेरा बताने पर तुली रही जबकि हमारे बीच चार माह से भी अधिक समय से संबंध नहीं बने थे। इसलिए मैं परेशान रहने लगा।

संजू ने बताया कि 18 अगस्त की रात में फिर संगीता के साथ उसके गर्भ को लेकर मेरा विवाद हुआ जिस पर वह हल्ला करने लगी। तो गुस्से में आकर मैंने उसका गला चाकू से रेत दिया और लाश को बोरे में भरकर ले जाकर शिवनाथ नदी में फेंक आया। सुबह माता-पिता ने संगीता के बारे में पूछा तो मैंने उसके भाग जाने की बात कह दी। चूंकि वह एक बार पहले भी भाग चुकी थी इसलिए घर वालों ने मेरी बात पर भरोसा कर लिया। पुलिस का कहना है कि गांव वाले भी संजू की बात पर भरोसा करके संगीता को कोश रहे थे लेकिन उसकी लाश मिल जाने पर पूरा मामला सामने आ गया।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित।

सोशल मीडिया पर हुई मुलाकात के बाद दीवाने हुए संजू को चंद मुलाकातों के बाद जब संगीता के गर्भवती होने की जानकारी लगी तो उसके पैरों तले से जमीन खिसक गई थी। क्योंकि संजू और संगीता के बीच तो ऐसा कुछ हुआ भी नहीं था जिससे संगीता को गर्भ ठहर जाए। फिर भी संगीता को इस गर्भ से मुक्ति दिलवाकर संजू ने उसे अपनी पत्नी बना लिया था। लेकिन शादी के बाद अपने प्रेमी के संग भागकर जब संगीता फिर पेट में आशिक का अंश लेकर लौटी तो संजू ने संगीता का गला रेतकर नदी में बहा दिया।

चार माह से मेरे पत्नी से नहीं थे संबंध

आरोपी पति संजू।

आरोपी संजू का कहना है कि प्रेमी के पास से वापस आने के बाद मैंने पत्नी से संबंध खत्म कर लिए थे। उसके साथ पिछले चार माह से मेरे संबंध नहीं थे ऐसे में उसके पेट में बच्चा आने से मैं परेशान था। इसलिए उसकी हत्या कर दी। पुलिस का कहना है कि मृतका के पेट में मिले भ्रूण का डीएनए मिलान किया जाएगा।

हत्या में घर वाले भी शामिल हैं?

मृतका संगीता।

संजू की ससुराल वालों का आरोप है कि यह संभव नहीं कि घर में बेटी का चाकू से गला रेत कर हत्या कर दी जाए और किसी को उसकी चीख भी सुनाई न दे। उनका यह भी कहना है कि अकेला एक आदमी मोटर साइकल पर लाश ले जाकर नदी में नहीं फेंक सकता। उनका आरोप है कि और भी आरोपी साथ रहे है लेकिन पुलिस ने केवल संजू को आरोपी बनाया है।

वह प्रेमी से दूसरी बार गर्भवती हुई थी

आरोपी पति का कहना है कि शादी से पहले भी में पत्नी से मिलता था लेकिन उसके साथ कभी संबंध नहीं बने थे। इसलिए जब उसके गर्भवती होने की बात मालूम चली तो मैंने उससे शादी करने से मना कर दिया। लेकिन उसके कहने पर मदद करने के लिए दवा लाकर दी थी जिससे उसका गर्भ गिर गया था। इसके बाद उसने मुझे जबरदस्ती शादी कर ली थी। मैंने उसे स्वीकार कर लिया लेकिन वह घर से भागकर फिर प्रेमी का गर्भ लेकर मेरे पास वापस लौट आई थी जो मुझे मंजूर नहीं था।

पुलिस गिरफ्त में आरोपी।

सत्यकथा

ग्वालियर : सहेलियों को उनके प्रेमी संग होटल के कमरों में भेजकर ब्लैकमेल कर रही थी कॉलेज गर्ल

एकांत में मिलने की चाहत और इससे जुड़ा एक सवाल, क्या करें सेफ जगह ही नहीं मिलती, हर प्रेमी जोड़े के मन में होता है। प्रेमी जोड़ों के सवाल का हल निकालकर इंजीनियरिंग छात्रा सुधा चौबे उनको जासूसी कैमरा लगा होटल का कमरा उपलब्ध करवाकर ब्लैकमेल कर रही थी।

प्रेमलीला in room no. 203

अगस्त महीने का पहला हफ्ता बीत चुका था। आसमान में छाई काली घटाओं ने मौसम में रूमानियत घोल रखी थी। ऐसे में ग्वालियर के एक निजी कॉलेज में अपनी सहेली किम (बदला नाम) को उस रोज कुछ ज्यादा ही चहकते देखकर उसकी सहेली नीता (बदला नाम) से जब रहा न गया तो पूछ ही लिया-

सच, कहां पर?

होटल के कमरे में। सच में यार मजा ही आ गया। कब से इंतजार था हम दोनों को इस पल का खूब इंज्वाय किया।

मतलब वो सब भी...

यस वो सब भी। सच में यार पहले मिलन का नशा ही कुछ और है।

सुधा और उसके प्रेमी भूपेन्द्र तथा तीसरे आरोपी ब्रजेश के मोबाइल तथा पेन ड्राइव में पुलिस ने दर्जनों जोड़ों के ऐसे अश्लील वीडियो बरामद किए है जो उन्होंने होटल के कमरे में जासूसी कैमरा लगाकर तैयार किए थे।

क्या बात है आज बड़ी चहक रही है?

मत पूछ यार, कल सालों की तमन्ना पूरी जो हो गई है।

लॉटरी लग गई क्या?

यही समझ ले।

सीधे बता न क्या हुआ, नाटक क्यों कर रही है।

चल साइड में आ लेकिन किसी को कहना नहीं।

तो मुझे भी मत बता।

अरे नहीं यार तुझे तो इसलिए बता रही हूं क्योंकि तेरी हालत भी मेरे जैसी है। इसलिए इसमें तेरा भी भला है। सुन कल मैं पूरे चार घंटे तक अशोक (बदला नाम) के साथ अकेली रही।

तू होटल कैसे पहुंच गई, अशोक ले गया था क्या?

नहीं अरे अपनी सुधा है न सुधा चौबे (बदला नाम), उसी ने मुझे सिटी सेंटर की होटल में कमरा बुक करके दिया था। पैसा हमने ही चुकाया लेकिन कमरा बुक उसने कर दिया था इसलिए होटल वाले ने कुछ नहीं पूछा और आराम से चार घंटे तक हम दोनों एक कमरे में बंद रहे। सुन तुझे इसलिए बता रही हूं क्योंकि मैं जानती हूं कि तुझे और नरेन्द्र(बदला नाम) को भी लंबे समय से ऐसे की किसी सेफ प्लेस की तलाश है। मेरी मान सुधा से बोल वो सब इंतजाम कर देगी।

नहीं यार डर लगता है।

जब तक मैं नहीं गई थी मुझे भी लगता था। लेकिन अब तो लगता है कि काश अशोक के साथ होटल के उसी कमरे में जाकर रहने लगूं। मान जा तेरी जरूरत देखकर बता रही हूं वर्ना कौन सा मुझे तेरे इस खेल में कुछ मिलने वाला है।

किम की बात सुनकर नीता ने पहले तो ध्यान नहीं दिया लेकिन कॉलेज से घर लौटने के बाद उसके दिमाग में किम का वहीं खिला हुआ चेहरा घूमता रहा। उसे लग रहा था कि क्या वाकई में सेक्स ऐसी चीज है जो चेहरे पर चमक ला देती है। रात में उसकी नींद टूटी तो फिर वही सब दिमाग में घूमने लगा इसलिए उसने सोच लिया कि वो नरेन्द्र भी तो उससे अकेले में मिलने परेशान रहता है बेचारा। इसलिए उससे बात करेगी अगर वो राजी हो गया तो फिर एक बाद ट्राई करने में कोई नुकसान नहीं है।

दो दिन बाद एक कैफे में प्रेमी नरेन्द्र के साथ बैठी नीता उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए बोली-

लाओ तुम्हारे हाथों की रेखाएं देखूं क्या लिखा है?

ज्योतिषी कब से बन गई?

अरे लाओ भी, कहते हुए नीता ने प्रेमी की हथेली अपने हाथ में लेकर उसे देखते हुए बोली- बच्चा तुम्हारी लॉटरी लगने वाली है।

शेष पृष्ठ 4 पर...

दरभंगा

खूबसूरत टीचर के इश्क में मारा गया प्रधान अध्यापक

एक मास्टर, मास्टरनी की प्रेम कहानी

दो साल पहले अलग-अलग स्कूलों से तबादला होकर मधुपुर स्कूल में आए हेड मॉस्टर राजेश ठाकुर और शिक्षिका रेखा ने एक साथ केवल स्कूल ही ज्वाइन नहीं किया बल्कि उसी रोज एक दूसरे के दिल में भी दस्तक दे दी थी। दोनों ने अपने दिल पर एक दूसरे की दस्तक सुनकर दरवाजे खोले और ....

शाम 4 बजे छुट्टी की घंटी बजते ही घर की तरफ भागने के इंतजार में बैठे प्राइमरी स्कूल के बच्चे शोर मचाते हुए क्लास रूम से बाहर निकल आए। दरभंगा जिले के सोनपुर इलाके के छोटे से गांव मधुपुर टोला कि इस स्कूल में गिनती के बच्चे थे सो जल्द ही स्कूल बच्चों से खाली हो गया। लेकिन हेड मास्टर के कक्ष में अभी भी थोड़ी चहल-पहल थी वो इसलिए कि पिछले दो साल से इस स्कूल में हेड मास्टर के तौर पर पदस्थ रहे राजेश ठाकुर ने अपना तबादला गृह जिले मधुबनी में करवा लिया था। जिसके चलते स्कूल के बाद वह अपना प्रभार दूसरे शिक्षक को सौंप रहे थे। थोडी ही देर में कागजी कार्रवाई कर वह स्टाफ से विदा लेकर बाहर निकले तभी सामने से रेखा(बदला नाम) को अपने पति के साथ आते देखकर रुक गए।

हेड मास्टर के साथ शादी करना चाहती थी टीचर

पीएम के लिए मृतक का शव ले जाते परिजन।

जांच में सामने आया कि रेखा अपने आशिक हेड मास्टर के साथ शादी करना चाहती थी। लेकिन शादीशुदा हेड मास्टर इसके लिए राजी नहीं था इसलिए जब रेखा ने दबाव बनाया तो हेड मास्टर ने अपना तबादला दूर के जिले में करवा लिया था। इससे नाराज रेखा ने हेड मास्टर के मोबाइल में खुद के अश्लील फोटो होने की जानकारी पति को दे दी थी।

रेखा भी इसी स्कूल में शिक्षिका रह चुकी है। दो माह पहले ही उसका तबादला अन्य स्कूल में हुआ था। यह संयोग था के दो साल पहले रेखा और हेड मास्टर राजेश ठाकुर अलग-अलग स्कूल से तबादला होकर यहां आए थे। दोनों ने यहां एक ही रोज ज्वाइन किया था इसलिए उम्र में दस-बारह साल का अंतर होने के बाद भी 25 साल की रेखा से राजेश ठाकुर की अच्छी बनती थी।

रेखा और उसके बिजली मिस्त्री पति अभिलाष ने पास आकर राजेश को नमस्ते किया। रेखा ने बताया कि उसे पता लगा कि आप आज रिलीव हो रहे हैं इसलिए मिलने चली आई। तीनों 5-10 मिनट बाहर खड़े होकर बात करने लगे फिर रेखा अपने पति के साथ वापस लौट गई और राजेश अपनी मोटर साइकल से घर की तरफ रवाना हो गए। लेकिन अभी वह स्कूल से कोई 2 सौ मीटर दूर ही पहुंचे थे कि घात लगाकर बैठे एक युवक से उसने ऊपर दो फायर झोंक दिए और मौके से फरार हो गया। चलती मोटर साइकल पर गोली लगने से राजेश सड़क पर गिर गया। गांव के सभी लोग मास्टर को जानते थे इसलिए उसे उठाकर तत्काल अस्पताल ले गए लेकिन डॉक्टर्स ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। सरे आम हेड मास्टर की हत्या की खबर सुनकर थाना सकतपुर से टीआई अरविंद कुमार टीम लेकर मौके पर पहुंच गए। पूछताछ में लोगों ने बताया कि उन्होंने एक युवक को भागते हुए तो देखा था लेकिन उसने अपना चेहरा छुपा रखा था इसलिए उसकी पहचान कोई नहीं बता पाया।

स्कूल से अपने आखिरी दिन काम करके वापस लौट रहे हेड मास्टर की हत्या की बात से पुलिस समझ गई कि हत्यारा इसी गांव का हो सकता है जो राजेश ठाकुर के गांव छोड़कर जाने से पहले उससे अपना हिसाब करना चाहता था। इसलिए जब पुलिस ने स्कूल स्टाफ और अन्य लोगों ने गहराई से पूछताछ की तो स्कूल की पुरानी शिक्षिका रेखा का नाम सामने आया। लोगों ने दबी जुबान में बताया कि राजेश के साथ रेखा का कुछ चक्कर चल रहा था। दोनों को कई बार लोगों ने खाली क्लास रूम में संबंध बनाते भी देखा था। इसलिए जब गांव में बदनामी हुई तो दो माह पहले लोगों की शिकायत पर रेखा का तबादला यहां से कर दिया गया था। इसके बाद भी रेखा अक्सर राजेश से मिलने स्कूल आया करती थी। घटना से ठीक पहले भी रेखा और उसका पति राजेश ठाकुर से मिलकर गए थे।

इस पर पुलिस ने शक के आधार पर रेखा और उसके पति को पूछताछ के लिए उठा लिया। रेखा ने राजेश के साथ अपने संबंध की बात को गलत बताया साथ ही उसने कहा कि राजेश उसके साथ दो साल तक रहे अब वह यहां से तबादला करवाकर मधुबनी जा रहे थे इसलिए वह उनसे मिलने गई थी। अभिलाष ने भी यही बताया कि पत्नी के कहने पर वह उसके साथ गया था। इसी बीच पुलिस ने अभिलाष के मोबाइल की जांच की तो पता चला कि उसी रोज उसने इलाके के एक बदमाश को 2 हजार रुपए ऑन लाइन ट्रांसफर किए थे।

अभिलाष इस ट्रांजेक्शन के बारे में पुलिस को साफ जबाव नहीं दे पाया तो पुलिस ने उससे अपने तरीके से पूछताछ की जिसमें उसने स्वीकार कर लिया कि उसी ने 50 हजार की सुपारी देकर राजेश पर हमला करवाया था। साथ ही उसने बताया कि सुपारी केवल राजेश के हाथ-पैर तोड़ने और मोबाइल छीनने के लिए दी थी। हत्या की उसने कोई बात नहीं की थी मगर बदमाश ने उनकी हत्या कर दी।

मोबाइल छीनने के लिए सुपारी देने की बात पर पुलिस चौंकी और पूछताछ की तो मालूम चला कि हेड मास्टर के अवैध संबंध अभिलाष की टीचर पत्नी रेखा

गांव के स्कूल में कभी अक्सर बच्चों के अनुपस्थित रहने के कारण जब बाकी का स्टाफ समय से पहले घर लौट जाता तो सूने स्कूल के कमरों में हेड मास्टर राजेश और रेखा एक दूसरे को मोहब्बत के पाठ पढ़ाने लगते।

के साथ थे। स्टाफ के लोग ही नहीं गांव के स्कूल में घूमने वाले कुछ आवारा युवक भी दोनों को खाली क्लास रूम में संबंध बनाते देख चुके थे जिससे गांव में अभिलाष की बदनामी होने से वह राजेश से नाराज था। पूछताछ में यह भी सामने आया कि पूरी योजना में राजेश की प्रेमिका टीचर रेखा भी शामिल थी इसलिए पुलिस ने उसे भी

आरोपी पति अभिलाष।

गिरफ्तार कर दोनों को जेल भेज दिया जिसके बाद यह कहानी इस प्रकार सामने आई।

दो साल पहले स्कूल में एक ही दिन ज्वाइन करने के कारण राजेश और रेखा का नए स्टाफ में किसी और से ज्यादा परिचय न होने के कारण पूरा पहला दिन दोनों का आपस में बातें करते बीतने के कारण एक दूसरे से एक स्वभाविक लगाव हो गया था। समय के साथ यह लगाव बढ़ता ही गया जिससे राजेश से उम्र में बारह साल छोटी रेखा उसकी तरफ आकर्षित होने लगी। दरअसल इस आकर्षण का एक कारण यह भी था कि रेखा जहां टीचर थी वहीं उसका पति लोगों के घरों में बिजली सुधारने का काम करता था। रेखा को अपने पति का काम पसंद नहीं था ऊपर से उसे शराब पीने की आदत भी थी।

आरोपी महिला टीचर।

दूसरी तरफ हेड मास्टर राजेश ने देखा कि रेखा उसमें रुचि ले रही है तो उसने भी रेखा की तरफ कदम बढ़ाना शुरू कर दिया। जिससे जल्द ही उनके बीच प्रेम प्रसंग चल पड़ा। दोनों ही विवाहित थे और कहा जाता है कि जब भी विवाहित स्त्री या पुरुष किसी दूसरे के साथ प्रेम में पड़ता है तो उनका एकमात्र उद्देश्य शारीरिक सुख पाना होता है। इसलिए राजेश और रेखा भी शारीरिक सुख लूटने के अवसर की तलाश में रहने लगे। इसके लिए पहले योजना बनी की रेखा मौका मिलने पर राजेश को अपने घर बुला लेगी। लेकिन पास पड़ोस में रहने वाले लोगों के कारण यह योजना सफल नहीं हो सकी। राजेश के घर में खुद उसकी पत्नी रहती थी इसलिए उसके घर जाकर मिलने का कोई सवाल न था।

लेकिन समय के साथ दोनों की तड़प बढ़ती जा रही थी क्योंकि एक तरफ जहां रेखा अपने से उम्र में बड़े पुरुष का अनुभव करने की इच्छा रखती थी वहीं राजेश अपने से उम्र में छोटी युवती के साथ संबंध बनाने के लिए बेताब था।

शेष पृष्ठ 7 पर...

लूट से हत्या करना ज्यादा आसान है

घायल हेडमास्टर का अस्पताल ले जाते लोग।

सुपारी किलर के साथियों ने बताया कि लूट करने से ज्यादा आसान हत्या करना होता है। लूट में लड़ाई झगड़े और पकड़े जाने का डर ज्यादा है जबकि हत्या में दूर से गोली मारकर काम किया जा सकता है। इसलिए बदमाश लूट को मुश्किल और हत्या को आसान मानते है।

...पृष्ठ 3 का शेष

संयोग से मृतक अनिल की मोहल्ले की जिसे युवती से संबंधो की चर्चा थी उसका देवर भी इसी आवारा टुकड़ी का सदस्य था। सभी जानते थे कि इसकी भाभी का अनिल के साथ चक्कर चल रहा है लेकिन दोस्त शर्मिंदा न हो इसलिए उसके सामने इस बात की चर्चा कोई नहीं छेड़ता था। लेकिन कुछ महीने पहले कुछ ऐसा हुआ कि अनिल और युवती का रिश्ता सरे आम उजागर हो गया। इसके बाद इन दोस्तों में भी इसकी चर्चा हुई तो सबने अनिल को सबक सिखाने की ठान ली। लेकिन बात आई गई हो गई।

आरोपी अभिषेक टींगा।

लेकिन दूसरी तरफ खुद को प्ले बॉय समझने वाला मृतक अनिल अब भी आशिकी से बाज नहीं आ रहा था। जिसके चलते वो ऐसी गलती कर बैठा कि उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

हुआ यह कि सभी आरोपियों के एक ही मोहल्ले में रहने के कारण उनके परिवारों की भी आपस में अच्छी बनती थी जिससे उनका एकदूसरे के घर आना-जाना भी था। संयोग से एक आरोपी की जवान और खूबसूरत बहन सिम्मी (बदला नाम)का अपने भाई के उस दोस्त के घर पर आना-जाना था जिसकी भाभी से मृतक अनिल का अवैध रिश्ता चल रहा था। इसी बीच संयोग

आरोपी अंकित,रोहित और गजाधर।

आरोपी कपिल, चिन्नू और ललित।

से एक रोज जब सिम्मी उस घर में बैठी थी तभी अनिल करोसिया अपनी प्रेमिका से मिलने वहां आ गया। उसने वहां सिम्मी को देखा तो उल्टे पैर वापस तो लौट गया लेकिन उसे लगा कि सिम्मी अब जवान हो चुकी है इसलिए आसानी से उसके हाथ आ सकती है।

बस उसी रोज से अनिल सिम्मी के पीछे पड़ गया। सिम्मी उसे जहां भी रास्ते में टकराती तो उसे रोककर अपने इश्क का इजहार करने लगता। लेकिन सिम्मी उसकी बात अनसुनी कर कट कर निकल जाती। ऐसा कई बार हुआ मगर सिम्मी ने डर के कारण घर पर शिकायत नहीं की तो अनिल का हौसला बढ़ने लगा। उसे लगने लगा कि एक न एक दिन सिम्मी उसकी बात मान लेगी इसलिए उसकी हरकतें लगातार बढ़ने लगी।

घटना से चंद रोज पहले अनिल ने सिम्मी को सड़क पर रोककर कहा बात मान मेरी बीवी बन जा, सोने चांदी से लाद दूंगा और रानी बनाकर रखूंगा।

अब पानी सिर के ऊपर हो चुका है यह सोचकर उसी दिन शाम को सिम्मी ने अनिल की हरकत के बारे में अपने आरोपी भाई को बता दिया। यह सुनते की भाई का खून खौल गया। उसने तुरंत सभी दोस्तों को इकट्ठा कर अनिल की हरकत के बारे में बताया। सभी दोस्त एक दोस्त की भाभी के साथ अनिल के अवैध संबंध को लेकर पहले की गुस्से में थे इसलिए अब जब बात बहन पर आई तो सभी ने उसे खत्म करने का फैसला ही नहीं किया बल्कि तय कर लिया कि अनिल को ऐसी मौत देंगे जिससे उनके गिरोह का दबदबा भी कायम हो जाए। इसके लिए उन्होंने सिम्मी

घटना स्थल पर पड़ी मृतक की एक्टिवा।

के जन्म दिन को चुना और तय किया कि जिस चाकू से सिम्मी केक काटेगी उसी चाकू से हम अनिल का गला काटेंगे।

बात तय हो जाने के बाद आरोपियों ने ऑन लाइन पांच चाकू बुलवाए उन्हीं में से एक चाकू से सिम्मी ने

सीसीटीवी में भागते समय कैद हुआ आरोपी।

केक काटने के बाद गिरोह के सदस्यों के साथ फोटो खिचवाया जिसके बाद सब अनिल को ठिकाने निकल पड़े। इसी बीच गजाधर और कपिल ने देखा कि अनिल एक जगह बैठकर शराब पी रहा है। इसलिए जैसे ही वह वहां से अपनी एक्टिवा लेकर निकला गजाधर और कल्लू ने बाकी साथियों को इशारा कर दिया। जिससे जैसे ही अनिल नानाखेड़ी मंडी से निकला, ललित, कपिल और अभिषेक ने उसे रोककर हमला कर दिया। इस दौरान अंकित अग्रोटिया, गर्वित जाटव और अंकित कुशवाह ने चारों तरफ से घेराबंदी कर सबसे पहला बार उसी चाकू से किया जिससे सिम्मी ने केक काटा था। इसके बाद सभी आरोपी राड हाकी लेकर उसके ऊपर टूट पड़े। जिसके बाद जब उन्हें भरोसा हो गया कि अनिल मर चुका है तो वे सभी अलग-अलग दिशाओं में भागे। लेकिन मुंह खुला होने के कारण सीसीटीवी में ललित चंदेल की पहचान हो जाने से घटना के छह घंटे बाद ही पुलिस ने सात आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित।

...पृष्ठ 6 का शेष

अशोक तुम अकेले में मुझे दीदी मत कहा करो।

क्यों?

क्योंकि मैं तुम्हें प्यार करने लगी हूं और यह भी जानती हूं कि तुम भी मुझे चाहते हो।

सपना की बात सुनकर अशोक चुपचाप खड़ा रह गया। तो सपना बोली कुछ बोलो न।

इसी खेत में फेंका गया था अशोक का शव।

क्या बोलू मुझे डर लग रहा है।

डरो मत शाम से पहले कोई वापस नहीं आएगा। आओ अंदर चलकर बैठते हैं। यह कहकर सपना अशोक का हाथ पकड़कर अंदर कमरे में ले गई। दोनों की जिंदगी में प्यार का यह पहला अनुभव था इसलिए शाम तक वे एक दूसरे में खोए रहे उसके बाद घर वालों के आने से पहले सपना ने अशोक का वापस भेज दिया।

चूंकि अशोक के सपना के घर आने जाने पर कोई रोक नहीं थी इसलिए उस दिन के बाद अशोक मौका लगते ही सपना के पास पहुंच जाता और फिर दोनों एक दूसरे के प्यार में डूब जाते। कहना नहीं होगा कि इस नए रिश्ते के बाद अशोक अक्सर संतोष से मिलने के बहाने उसके घर आने लगा जिससे धीरे-धीरे काशीराम को सपना के साथ अशोक की बढ़ती दोस्ती पर शक होने लगा। जिससे एक रोज उन्होंने अशोक को घर आने से मना कर दिया। इस पर भी अशोक नहीं माना तो काशीराम ने बेटे को काबू में रखने की हिदायत अशोक के परिवार वालों को भी दे दी। पिता ने भी अशोक को समझाया लेकिन न अशोक माना और न सपना।

घटना दिनांक को काशीराम और उसका बेटा संतोष दोनों बाहर गए हुए थे। सपना ने मौका देखकर अशोक को मिलने बुलाया तो वह मंदिर जाने के बहाने सपना के पास पहुंच गया। चूंकि दोनों प्रेमी काफी दिनों बाद मिले थे इसलिए एक दूसरे को देखते ही वे सब कुछ भूलकर प्यार में खो गए कि तभी काशीराम और संतोष वापस आ गए। सूने घर में अशोक को बेटी के साथ देखकर काशीराम गुस्से से उबल पड़े और उन्होंने अशोक को सबक सिखाने उसकी पिटाई शुरू कर दी। इसी बीच संतोष कट्टा उठा लाया तो गुस्से से भरे काशीराम से सीधे अशोक के सीने में गोली मार दी जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। काशीराम ने इस घटना की जिक्र किसी से करने पर सपना को भी जान से मारने की धमकी दी और रात में जब पूरा गांव सो गया तब अशोक शव उठाकर झाड़ियों में फेंक दिया।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित।

...पृष्ठ 2 का शेष

इसका नतीजा यह निकला कि एक रोज दोनों ने फैसला किया कि स्कूल में बच्चों की संख्या वैसे भी कम है जिनमें से आधे रोज अनुपस्थित रहते हैं। शहर से दूर होने के कारण स्टाफ के शिक्षक भी आए दिन गोल मार दिया करते थे। इसलिए दोनों की योजना बनी के जिस रोज स्टाफ नहीं आएगा उस रोज वे दो-तीन क्लास के बच्चों को एक कमरे में बैठाकर पढ़ाने का नाटक करेंगे ताकि खाली हुई क्लास रूम को अपने बेडरूम के तौर इस्तेमाल कर सके।

यह मौका उन्हें जल्दी ही नहीं मिला बल्कि बार-बार मिलने लगा और जिस रोज भी उन्हें मौका मिलता वे या तो बच्चों की जल्दी छुट्टी कर देते या फिर बच्चों को एक कमरे में बैठाकर दूसरे कमरे में जाकर दोनों अपनी वासना के खेल में डूब जाते। लेकिन ऐसा कब तक चलता एक रोज जब राजेश और रेखा पूरी तरह निर्वस्त्र होकर एक दूसरे में खोए थे तभी बगल की क्लास में दो बच्चों का झगड़ा हो जाने के कारण कुछ दूसरे बच्चे टीचर को बुलाने हेड मास्टर के कमरे में पहुंचे लेकिन जब वहां कोई नहीं दिखा तो उन्होंने दूसरे कमरों में देखा तो एक कमरे में रेखा और राजेश के पाप की कहानी बच्चों के सामने उजागर हो जाने से जल्द ही गांव में चर्चा का विषय बन गई।

गांव वालों तक बात पहुंच चुकी है इसकी जानकारी न तो रेखा को थी और न राजेश को। लेकिन अब उन्होंने बच्चों को एक कमरे में बैठाने के बजाए समय से पहले छुट्टी कर अपना मतलब साधना शुरू कर दिया था। इससे गांव के आवारा किस्म के कुछ युवक जिन्हें राजेश और रेखा की प्रेम कहानी की भनक लग चुकी थी समझ गए कि दोनों बच्चों की छुट्टी समय से पहले क्यों करते है। इसलिए एक रोज जब उन्होंने समय से घंटे भर पहले ही छुट्टी कर दी तो गांव के इन युवकों ने दबे पांव स्कूल में आकर रेखा और राजेश को आपत्तिजनक स्थिति में पकड़ लिया।

जिससे गांव में खुलकर हल्ला होने से रेखा कि पति अभिलाष को भी इसकी जानकारी हो जाने से पति-पत्नी में विवाद होने लगा। लेकिन रेखा अब तक पूरी तरह से हेड मास्टर की दीवानी हो चुकी थी इसलिए पति से विवाद के बाद भी उसने अपने कदम पीछे नहीं खींचे उल्टे वह राजेश से शादी करने के लिए कहने लगी। शादीशुदा राजेश तो केवल मस्ती करने के लिए रेखा का संग कर रहा था। शादी का तो उसने कभी सोचा भी नहीं था इसलिए उसने रेखा को टालना शुरू कर दिया। इसी बीच हेड मास्टर और एक शिक्षिका के इश्क की खबर जिले के शिक्षा अधिकारियों को लगी तो उन्होंने रेखा का तबादला कर दिया। लेकिन इसके बाद भी रेखा अपने प्रेमी से मिलने स्कूल में आती रही। जिससे पति के साथ उसका विवाद भी बढ़ने लगा।

इसी बीच रेखा से छुटकारा पाने के लिए राजेश ने अपना तबादला अपने गृह नगर मधुबनी में करवा लिया। इसकी जानकारी लगने से रेखा गुस्से से भर उठी। वह समझ गई कि दो साल तक शारीरिक सुख लूटने के बाद अब हेड मास्टर उससे पीछा छुड़ाना चाहता है।

रेखा जानती थी कि राजेश के मोबाइल में उसके अश्लील फोटो है इसलिए उसने सारी बात पति को बता दी जिससे राजेश का मोबाइल छीनने के लिए अभिलाष ने एक बदमाश को पचास हजार रुपए की सुपारी एडवांस में देकर यह काम सौंप दिया था लेकिन बदमाश ने सीधे राजेश की हत्या कर दी।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित।

दतिया

दोस्त की बड़ी बहन से दिल लगाने में मिली मौत

दीदी नहीं, नाम से पुकारो

बेटी के साथ पड़ोस के नाबालिग लड़के अशोक की बढ़ती दोस्ती से परेशान काशीराम कई बाद अशोक को बेटी से दूर रहने की चेतावनी दे चुका था। लेकिन घटना दिनांक को दोपहर में जब उसने एक बार फिर अशोक को अपनी बेटी की साथ देखा तो काशीराम खुद पर काबू नहीं रख सका और...

12 अगस्त की दोपहर के बारह बजे का ही वक्त था जब दतिया जिले के धीरपुरा थाना सीमा के एक छोटे से गांव इकौना में रहने वाले विजय प्रसाद दुबे दोपहर का खाना खाकर खेत के लिए निकले तो उनकी पत्नी ने उन्हें अशोक के दिख जाने पर घर भेज देने को कहा।

17 वर्षीय अशोक इंदरगढ़ में रहकर कक्षा 12 वीं में पढ़ रहा था। पति से बेटे को जल्द घर भेज देने की बात कहकर अशोक की मां काम में लग गई। लेकिन घंटा भर और बीत जाने पर भी अशोक घर नहीं आया तो उन्हें चिंता होने लगी। क्योंकि अशोक ने अभी खाना भी नहीं खाया था। इसके बाद जब कुछ समय और बीत जाने पर भी अशोक वापस नहीं आया तो उन्होंने पहले तो बाहर निकलकर घर के पीछे रहने वाले अशोक के दोस्त संतोष (बदला नाम) के घर जाकर अशोक के बारे में पूछताछ की और जब अशोक वहां भी नहीं मिला तो पति को फोन करके इस बात की जानकारी दे दी।

विजय प्रसाद खेत से वापस आकर गांव में बेटे की खोज खबर लेने के काम में लग गए। इस पर भी जब शाम तक अशोक की जानकारी नहीं लगी तो पूरा गांव विजय प्रसाद की मदद में जुट गया। लेकिन12 के बाद 13 और 14 अगस्त को दिन भी बीत गया मगर अशोक की खबर नहीं लगी तो 15 अगस्त की सुबह विजय प्रसाद (बदला नाम) ने धीरपुरा थाने में बेटे की गुमशुदगी दर्ज करवा दी।

जिससे तत्कालीन धीरपुरा टीआई शशांक शुक्ला ने एक टीम अशोक की खोज करने के काम में लगा दी।

लेकिन इसी दौरान उसी रोज शाम के वक्त गांव के कुछ लोगों ने अशोक के घर से महज 50-60 मीटर की दूरी पर एक खेत के किनारे खड़ी झाड़ियों में किसी युवक का सड़ा गला शव देखकर कपड़ों के आधार पर उसकी पहचान अशोक के रूप में करके पुलिस को खबर दे दी।

अशोक चार दिन पहले दोपहर 12 बजे के आसपास घर से निकलने के बाद लापता हुआ था। उसकी लाश भी घर से कुछ ही दूरी पर झाड़ियों मिली थी इससे पुलिस समझ गई कि अशोक की हत्या गांव में ही की गई है। इसलिए कुछ देर में डॉग स्क्वाड के साथ एफएसएल की टीम भी मौके पर पहुंच गई। पुलिस ने खोजी श्वान को घटनास्थल से छोड़ा तो वह सीधे अशोक के घर के ठीक पीछे रहने वाले उसके दोस्त संतोष के घर के बाहर जाकर भौंकने लगा।

दोस्ती होने के कारण संतोष के घर में अक्सर आना-जाना लगा रहता था। इसलिए पुलिस को शक था कि हो सकता है इसी कारण से खोजी कुत्ता भ्रमित हो रहा हो। क्योंकि कुत्ता द्वारा संतोष के घर की तरफ इशारा करने से पुलिस ने संतोष और उसके पिता काशीराम शर्मा (बदला नाम) से गहन पूछताछ की थी जिसमें दोनों ने माना था कि दोस्त होने के नाते अशोक उनके घर अक्सर आता रहता था।

इसके बाद पुलिस ने मृतक अशोक के मोबाइल की काल डिटेल निकाली जिसमें पता चला कि उसकी सबसे अधिक बातचीत अपने दोस्त संतोष की बड़ी बहन सपना (बदला नाम) से होती थी। दोनों के बीच कई बार रात में भी बात होती थी और घटना दिनांक को अशोक के मोबाइल पर आखिरी फोन सपना का ही आया था। इस पर महिला पुलिस ने गांव जाकर संतोष की बड़ी बहन सपना से पूछताछ की जिसमें सपना ने इस बात का साफ-साफ जवाब नहीं दिया कि वह अशोक के साथ देर रात में भी फोन पर क्या बात करती थी। इतना ही नहीं अशोक की हत्या की बात पर भी सपना खामोश रही जिससे पुलिस समझ गई कि अशोक की हत्या में सपना के साथ उसकी दोस्ती एक कारण हो सकती है। इसलिए पुलिस ने एक बार फिर काशीराम और संतोष को थाने बुलाकर उनके साथ सख्ती से पूछताछ की जिसमें थोड़ी देर में बाप-बेटा टूट गए और उन्होंने अशोक की हत्या की बात स्वीकार कर ली। काशीराम ने बताया कि वह अशोक को कई बार सपना से दूर रहने की चेतावनी दे चुके थे। लेकिन घटना दिनांक को जब उन्होंने एक बार फिर घर में ही अशोक को सपना के साथ देखा तो खुद पर काबू नहीं रख सके और उसकी हत्या करने के बाद शव रात के समय बाहर फेंक दिया। पुलिस ने काशीराम शर्मा के पास से हत्या में प्रयुक्त कट्टा बरामद कर उसे अदालत में पेश किया जहां से उसे जेल भेज दिया गया जबकि जुबिलाइन कोर्ट ने नाबालिग संतोष को बाल सुधार गृह भेज दिया। जिसके बाद यह कहानी इस प्रकार सामने आई।

गांव में एक दूसरे के पड़ोस में रहने वाले संतोष और अशोक की दोस्ती बचपन से ही चली आ रही थी। संतोष की बड़ी दीदी सपना को अशोक भी दीदी कहकर बुलाता था। जांच में सामने आया कि पेशे से किसान और व्यवसायी काशीराम शर्मा के घर में एक निश्चित उम्र के बाद बेटी का घर से निकलना मना था। इसलिए सपना की कोई ऐसी सहेली भी नहीं थी जिसके साथ वह अपना समय काट सके। घर में बाहरी लड़के भी नहीं आ-जा सकते थे। लेकिन अशोक की बात अलग थी। क्योंकि एक तो अशोक, सपना के छोटे भाई का दोस्त होने के नाते बचपन से ही घर में आना-जाना कर रहा था। दूसरे संतोष की तरह वह भी सपना को दीदी कहकर बुलाता था।

अशोक और संतोष दोनों की 17 साल के थे जबकि सपना 21 की हो चुकी थी। चूंकि सपना घर से बाहर नहीं जा सकती थी इसलिए जब कभी अशोक, संतोष से मिलने घर आता तो सपना उसके साथ ही बातचीत कर अपना समय काट लेती थी।

जाहिर सी बात है कि 21 की हो चुकी सपना की तो सपने देखने की उम्र थी ही दूसरे इंदरगढ़ में रहकर पढ़ाई करने के कारण यार दोस्तों की बातें सुन सुनकर अशोक भी छोटी उम्र में बड़े रंगीन सपने देखने लगा था। इसलिए धीरे-धीरे उसका ध्यान सपना की खूबसूरती की तरफ आकर्षित होने के बाद वह सपना में रुचि लेने लगा। यह बात सपना को पहले तो समझ में नहीं आई लेकिन जब उसे लगा कि अशोक अब उसे दूसरी ही नजर से देखने लगा है तो किसी युवक की ऐसी नजरों को तरस रही सपना भी अशोक में रुचि लेने लगी। जिससे कोई साल भर पहले जब एक रोज सपना के माता-पिता और संतोष तीनों खेत पर गए थे दोपहर के सन्नाटे में सपना ने अशोक को फोन लगाकर अपने घर आने को कहा।

अशोक तुरंत सपना के घर पहुंचा तो देखा कि वह बिल्कुल अकेली थी। क्या बात है दीदी, सपना को देखकर अशोक ने पूछा। शेष पृष्ठ 7 पर...

खोजी कुत्ते से मिला क्लू

इस तरह पड़ा मिला अशोक का शव।

टीआई शशांक शुक्ला के अनुसार शव गांव के पास पड़ा होने से साफ था कि मृतक की हत्या गांव में ही की गई है। इसलिए खोजी कुत्ते की मदद ली गई जो बार-बार आरोपी के घर की तरफ इशारा कर रहा था। इसलिए जब मृतक के मोबाइल की काल डिटेल से भी ऐसे ही संकेत मिले तो कड़ी पूछताछ में आरोपियों ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया।

बेटी के साथ देखकर गुस्से में कर दी हत्या

आरोपी काशीराम।

जांच में सामने आया है कि घटना दिनांक को सपना घर में अकेली थी इसलिए मौका देखकर अशोक उससे मिलने चला गया था। इसी दौरान आरोपी काशीराम और उसका बेटा घर लौट आए जहां उन्होंने अशोक को सूने घर में बेटी के साथ देखकर उसकी हत्या कर दी।

दे चुके थे दूर रहने की चेतावनी

मृतक अशोक।

आरोपी काशीराम ने कहा कि अशोक ने मेरे बेटे के साथ अपनी दोस्ती का फायदा उठाकर बेटी से दोस्ती कर ली थी। इसकी जानकारी लगने पर मैंने उसे कई बार सपना से दूर रहने की चेतावनी भी दी थी। लेकिन वह अपना रास्ता नहीं बदल रहा था।

गुना

जिस चाकू से काटा बहन ने बर्थ-डे कैक उसी से भाई ने काटा बहन के पीछे पड़े बदमाश का गला

एक चाकू दो काम

एक तीर से दो निशाने वाली कहावत तो पुरानी है लेकिन एक ही चाकू से बर्थ-डे केक और बहन के आशिक का गला काटे जाने की यह घटना गुना में सामने आई जहां भाई ने बहन पर बुरी नजर रखने वाले युवक का उसी चाकू से गला रेता जिससे बहन ने केक काटा था।

21 अगस्त की रात के कोई 9, साढे नौ बजे का वक्त था जब गुना के नानाखेड़ी इलाके खाद मंडी स्थित खाद वितरण केन्द्र के पास से गुजर रहे राहगीरों ने सड़क किनारे एक युवक को रक्त रंजित हाल में पड़ा देखकर केंट थाने को खबर कर दी। खबर पाकर टीआई अनूप कुमार भार्गव तत्काल मौके पर जा पहुंचे।

मौके पर घायल पड़े युवक की मौत हो चुकी थी। जिसकी पहचान कर्नलगंज निवासी 35 वर्षीय अनिल करोसिया के रूप में होने के बाद टीआई ने शव को पीएम के लिए भिजवाकर इसकी खबर एसपी गुना अंकित सोनी को दे दी।

युवक के शरीर पर जिस तरह से धारदार हथियारों के गहरे घाव थे पास ही उसकी स्कूटी पड़ी थी जिससे साफ था कि घटना के वक्त युवक स्कूटी पर सवार था जब उसके ऊपर हमला कर हत्या की गई है। इसलिए एसपी श्री सोनी ने तत्कार सीएसपी गुना प्रियंका मिश्रा के नेतृत्व में केंट थाना प्रभारी टीआई अनूप कुमार भार्गव, एसआई राहुल शर्मा, एसआई ज्योति राजपूत,,एसआई बालकिशन, बलवीर सिंह, प्रधान आरक्षक गोरीशंकर सांसी, अमित तिवारी, प्रदीप धाकड़, लक्ष्मीनारायण यादव, शिवदयाल वर्मा, प्रधान आरक्षक मुकेश मौर्य, सुरेन्द्र भार्गव, अमित कलावत, आरक्षक धर्मेन्द्र रघुवंशी, सूर्यभान जाट, देवेन्द्र रघुवंशी, राजू बघेल, मनमोहन लोधी, महिला आरक्षक रक्षा कंवर, महेन्द्र छारी, विकाश राजपूत, लक्ष्मीनारायण पारस, अरविन्द यादव, गोविन्द रघुवंशी, राजीव सेन, पुलिस लाईन से आरक्षक राजीव रघुवंशी और सायबर सेल से आरक्षक कुलदीप यादव की एक टीम गठित कर दी।

शव को पीएम के लिए भेजने के साथ ही इस टीम ने आसपास इलाके में लगे सीसीटीवी कैमरों को खंगालना शुरू कर दिया।

घटना का खुलासा करते पुलिस आधिकारी तथा पुलिस गिरफ्त में आरोपी।

वारदात से कुछ समय पहले आरोपी ने उसी चाकू से कटवाया था अपनी बहन का बर्थ डे केक।

6 घंटे में हत्या की गुत्थी सुलझाई

एसपी अंकित सोनी ने बताया कि मामले को गंभीरता से लेकर तीन टीमें बनाई गई थीं। महज 6 घंटे में हत्या की गुत्थी सुलझा ली गई।

पुलिस टीम ने तत्काल ललित के ठिकाने पर दबिश देकर उसे गिरफ्तार कर लिया जिससे पकड़े जाने पर ललित ने पूरी वारदात का खुलासा कर दिया। जिसके आधार पर पुलिस ने अभिषेक उर्फ टिंगा, अंकित कुशवाह, कल्लू उर्फ रोहित, गज्जू उर्फ गजाधर, कपिल सगर और गर्वित उर्फ चिन्नू सभी निवासी कर्नलगंज गुना को गिरफ्तार कर उनके पास से हत्या में प्रयुक्त दो हॉकी, एक चाकू, मोबाइल और वारदात में पहने कपड़े भी जब्त कर लिए। जिसके बाद पुलिस ने सभी 7 आरोपियों को अदालत में पेश किया जहां से उनको जेल भेज दिए जाने के बाद यह कहानी इस प्रकार सामने आई।

कर्नल गंज निवासी मृतक अनिल करोसिया किशोर उम्र से ही दिलफेंक किस्म का था। इसलिए जवानी की पहली दहलीज पर आते ही उसने मोहल्ले की युवतियों के चारों तरफ चक्कर लगाना शुरू कर दिया था। बताते हैं कि इस मामले में वह कई युवतियों के परिजनों के हाथों पिटा भी तो कुछ एक युवतियां उसके बिछाए जाल में फंस भी चुकी थी।

बहरहाल बचपन की आदत अनिल ने जवानी में जिससे रात लगभग साढे नौ बजे के आसपास कई युवक घटना स्थल से अलग-अलग भागते दिखाई दिए जिनमें से एक युवक का चेहरा खुला होने के चलते उसकी पहचान ललित चंदेल के रूप में हुई।

इश्क के शौक में मारा गया

मृतक अनिल करोसिया।

अनिल करोसिया के बारे में बताया जाता है कि वह किशोर उम्र से ही इश्क मोहब्बत के खेल में पड़ गया था। कई युवतियों से संपर्क में रहने के बाद आजकल उसके अवैध संबंधो की चर्चा एक भाभी के साथ जोरों पर थी। इसी बीच मृतक ने एक आरोपी की बहन जो उससे आधी उम्र की थी छेड़छाड़ शुरू कर दी थी। जिसकी जानकारी लगने पर सभी दोस्तों ने मिलकर अनिल की हत्या कर दी।

दूसरी तरफ गिरफ्तार किए गए सभी आरोपी अभिषेक उर्फ टिंगा, अंकित कुशवाह, कल्लू , गजाधर, कपिल सगर और गर्वित तथा ललित चंदेल भी कर्नलगंज इलाके के रहने वाले हैं। 19 से 22 साल उम्र के इन आरोपियों में अकेला गजाधर ही तीस से ऊपर का है लेकिन उसकी इस युवा दुकड़ी से अच्छी बनती थी। आरोपियों के पास कोई काम तो था नहीं इसलिए आवारागर्दी करना ही उनके पास इकलौता काम था जिसे सब पूरी ईमानदारी से करते भी थे। शेष पृष्ठ 7 पर...

इनका रहा योगदान

इस कार्रवाई में सीएसपी गुना प्रियंका मिश्रा के नेतृत्व में केंट थाना प्रभारी टीआई अनूप कुमार भार्गव, एसआई राहुल शर्मा, एसआई ज्योति राजपूत,,एसआई बालकिशन, बलवीर सिंह, प्रधान आरक्षक गोरीशंकर सांसी, अमित तिवारी, प्रदीप धाकड़, लक्ष्मीनारायण यादव, शिवदयाल वर्मा, प्रधान आरक्षक मुकेश मौर्य, सुरेन्द्र भार्गव, अमित कलावत, आरक्षक धर्मेन्द्र रघुवंशी, सूर्यभान जाट, देवेन्द्र रघुवंशी, राजू बघेल, मनमोहन लोधी, महिला आरक्षक रक्षा कंवर, महेन्द्र छारी, विकाश राजपूत, लक्ष्मीनारायण पारस, अरविन्द यादव, गोविन्द रघुवंशी, राजीव सेन, पुलिस लाईन से आरक्षक राजीव रघुवंशी और सायबर सेल से आरक्षक कुलदीप यादव की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

...पृष्ठ 1 से जारी

ग्वालियर में एक कॉलेज गर्ल द्वारा सहेलियों की अश्लील फिल्म बनाकर ब्लैकमेल करने का चर्चित मामला

कब, नीता की बात पर हंसते हुए नरेन्द्र ने पूछा।

जब तुम चाहो, कहो तो कल या कहो तो दो दिन बाद।

लेकिन बाबाजी मैने तो कोई लॉटरी का टिकट ही

नहीं खरीदा फिर लॉटरी लगेगी कैसे?

तुम नादान हो बच्चे, ये इतना बड़ा लॉटरी का टिकट तुम्हारे सामने बैठा है वो दिखाई नहीं देता क्या। नीता ने खुद की तरफ इशारा करते हुए कहा तो नरेन्द्र ने गंभीर होकर पूछा- क्या मतलब?

मतलब ये कि हमारे मिलने के लिए सेफ जगह का इंतजाम हो गया है।

शातिर सरगना खुद हो रही थी धोखे का शिकार

गिरोह की सरगना जुझारनगर दतिया निवासी सुधा चौबे है जो ग्वालियर के एक कॉलेज ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने आई थी। इस दौरान उसकी मुलाकात

शातिर सरगना सुधा चौधरी।

मुरैना निवासी भूपेन्द्र धाकड़ से हुई। भूपेन्द्र धाकड़ शादीशुदा है लेकिन उसने खुद को अविवाहित बताकर सुधा से दोस्ती करने के बाद उसके संग शादी करने का वादा कर उससे नजदीकी बना ली थी। जिसके संग सुधा शादी के सपने देख रही थी। भूपेन्द्र शादीशुदा है यह बात सुधा को उसकी गिरफ्तारी के बाद पता चली।

सच, कहां?

सिटी सेंटर की होटल विराट इन में। वो दतिया वाली सुधा है न उससे मैंने कल ही बात कर ली है वो हमारे लिये वहां कमरा बुक कर देगी। इसके बाद नीता ने अपने प्रेमी को किम द्वारा सुनाई पूरी कहानी बता दी जिसे सुनकर नरेन्द्र राजी हो गया।

होटल सेक्स ब्लैकमेल गैंग की सरगना सुधा चौबे को गिरफ्तारी के बाद मालूम चला कि खुद को बड़ी ठग समझने वाली सुधा को भी उसका प्रेमी भूपेन्द्र धाकड़ ठग रहा था। शादीशुदा भूपेन्द्र खुद को कुंवारा बताकर सुधा के संग शादी करने के नाम पर रिलेशन में था।

बारीकी से हो रही होटल की मिली भगत की जांच

पुलिस को शक है कि इतना बड़ा कारनामा होटल के किसी स्टाफ की मदद के बिना संभव नहीं है। इसलिए पुलिस बारीकी से होटल स्टाफ की भूमिका की जांच कर रही है।

अगले दिन नीता ने सुधा चौबे से मिलकर कमरा बुक करने के लिए हरी झंडी दिखा दी तो अगस्त के तीसरे हफ्ते में एक रोज आशा ने उसे फोन कर बताया कमरा बुक हो गया है। काउंटर पर जाकर सीधे रूम नंबर 203 की चाबी मांगना बाकी मैंने सब सेट कर दिया है। जो खाना-पीना हो सब मिल जाएगा लेकिन हां कंडोम खुद लेकर जाना पड़ेगा।

ओके, नीता ने सुधा से कहा और उसके फोन रखते ही अगले दिन होटल में मिलने की बात नरेन्द्र को बता दी।

दोनों ने किसी तरह करवट बदलते हुए रात काटी और अगले दिन दोपहर होते ही एक आटो में बैठकर होटल पहुंच गए। कमरा पहले से बुक था इसलिए दोनों को 203 नंबर रूम की चाबी दे दी गई।

नीता और नरेन्द्र के बीच पिछले दो साल से प्रेम प्रसंग चल रहा था। दोनों एक दूसरे के काफी करीब आ चुके थे इसलिए उनके मन में नजदीकी की आग लंबे समय से सुलग रही थी इसलिए कमरे में पहुंचते ही नरेन्द्र ने दरवाजा बंद किया और नीता को लेकर बिस्तर में सिमट गया। पांच घंटे बाद जब दोनों बिस्तर से नीचे उतरे तब उनके चेहरों पर गहरी संतुष्टि के भाव देखकर आसानी से इस बात का अंदाजा लगाया जा

फीस भरने करने लगी थी ब्लैकमेल

आरोपी सुधा के अनुसार उसके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। वही बीई के बाद एमबीए करना चाहती थी इसलिए उसने फीस की व्यवस्था करने के लिए ब्लैकमेलिंग की योजना बनाई थी। गिरोह का मानना था कि अय्याशी करने वाले अविवाहित जोड़े ऐसे में मामले में पुलिस के पास जाने के बजाए पैसा देने में ही भलाई समझते हैं।

सकता था कि दोनों ने अपनी सालों पुरानी हसरत को जी भरकर जिया है।

थोड़ी देर में दोनों ने अपने कपड़े संभाले और कमरे से बाहर आकर होटल का किराया देकर बाहर निकलकर अपने-अपने घर चले गए।

उस रोज होटल में गुजारे उस क्वालिटी टाइम को याद कर नीता और नरेन्द्र रात भर न सो सके। दोनों को इसी बात का मलाल होता रहा कि इतनी जल्दी रूम छोड़ने की उन्हें क्या जरूरत थी। सच है प्यार करने वालों को पांच घंटे का वो वक्त भी कम लग रहा था। इसलिए दोनों ने दूसरे दिन मिलकर जल्द ही अगले हफ्ते फिर होटल में जाने का तय कर लिया।

लेकिन अगला हफ्ता आता इससे पहले ही पांचवे दिन नरेन्द्र के मोबाइल पर एक अंजान नंबर से किए गए काल पर किसी युवक ने उसे बताया कि उसके पास उसका और नीता को होटल के कमरा नंबर 203 का रंगीन सेक्स वीडियो है। साथ ही उसने नरेन्द्र को

demo pic.

प्रेमलीला...

डराते हुए कहा, क्या खूबसूरत है यार तेरी गर्ल फ्रेंड सचमुच इस वीडियो को पोर्न साइट पर बेच दूं तो कई लाख रुपए मिल जाएंगे मुझे। मेरी मान पढ़ना लिखना छोड़ और अपनी जीएफ को वोल वो पोर्न स्टार बन जाए। सच कह रहा हूं पैसा पानी की तरह बरसेगा तेरे ऊपर।

आरोपी भूपेन्द्र धाकड़ और उसका दोस्त ब्रजेश।

क्या कह रहे है आप, कौन सी होटल कैसा वीडियो?

चालाक मत बन, तेरी अंडरवीयर का कलर भी बता सकता हूं कि उस रोज तूने और तेरी जीएफ ने क्या पहना था क्या नहीं पहना था।

आप चाहते क्या हैं?

अब आया न रास्ते पर। ज्यादा कुछ नहीं बस एक लाख दे दो वीडियो डिलीट कर दूंगा।

मेरे पास इतना पैसा नहीं है।

जानता था तू यही कहेगा। चल ठीक है जा माफ किया मैं इसे मार्केट में बेचकर पैसा बना लूंगा।

नहीं प्लीज ऐसा मत करना। मुझे कुछ दिन का समय दो मैं कुछ करता हूं।

चल दिया तीन दिन का समय लेकिन तीन दिन से एक घंटा भी ज्यादा नहीं और हां चालाक बनने की कोशिश मत करना। पुलिस के पास गया तो वीडियो वायरल कर दूंगा।

नहीं... पुलिस के पास नहीं जाऊंगा। मैं करता हूं पैसों का इंतजाम। कहते हुए नरेन्द्र ने फोन काटकर इस बात की खबर नीता को दी तो नीता के पैरों के नीचे से जमीन ही खिसकती दिखाई देने लगी। उसे लगा कि अगर उसका अश्लील शहर में फैल गया तो उसके पास मरने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं रह जाएगा। इसलिए उसने नरेन्द्र से कहा कि वो किसी भी तरह उसे इस मुसीबत से बचा ले। नरेन्द्र से उसे हिम्मत बंधाने की कोशिश की लेकिन सच तो यह था कि खुद नरेन्द्र के हाथ-पैर फोन सुनने के बाद सुन्न पड़ गए थे।

इधर परेशान नीता ने रेखा को फोन लगाकर बताया कि उस रोज होटल में किसी ने उसका और नरेन्द्र को गंदा वीडियो बना लिया है और अब वह 1 लाख रुपया मांग रहा है।

इस पर रेखा चौंकते हुए बोली अरे नहीं उस होटल में ऐसा नहीं हो सकता।

क्या नहीं हो सकता। हो गया है फोन करने वाले से नरेन्द्र को मेरे अंडर गारमेंट के कलर तक बता दिए हैं।

तो तू एक काम कर अभी नरेन्द्र को बोल कि किसी तरह से वो बदमाशों की मांग पूरी करके वीडियो डिलीट करवा दे और हां उसे बोलना कि अगर पैसा का इंतजाम न हो तो मैं कुछ समय के लिए उसे पैसा उधार दे सकती हूं।

नीता और नरेन्द्र बुरी तरह से फंस चुके थे। पहले उन्हें इसलिए नींद नहीं आती थी कि वो होटल के कमरे से जल्दी क्यों बाहर आ गए थे वहीं अब इसलिए नींद नहीं आ रही थी कि आखिर वो होटल के कमरे में गए ही क्यों थे।

पल-पल करके तीन दिन बीतते ही दोपहर में उसी युवक ने फिर नरेन्द्र को फोन कर पैसों की मांग की तो नरेन्द्र ने पहले तो उससे और समय मांगा लेकिन जब फोन करने वाला उसे अपशब्द बोलने लगा और वीडियो वायरल करने की धमकी दी तो नरेन्द्र ने उसे दो किस्त में 50 हजार रुपए उसी समय ऑन लाइन ट्रांसफर कर दिए और बाकी के 50 हजार के लिए उसके हाथ-पैर जोड़कर एक दिन का समय और ले लिया।

नरेन्द्र जानता था कि कल उसके पास पैसों का इंतजाम होने का कोई जरिया नहीं है। इसलिए एक बाग़ी तो उसके मन में भी आत्महत्या करने का विचार आया। लेकिन उसके बिना नीता का क्या होगा यह सोचकर वह रुक गया। संयोग से इसी बीच नरेन्द्र के भाई ने उसे परेशान देखकर कारण पूछा तो उसने हिम्मत करके पूरी बात भाई को बता दी।

भाई से यह बात नरेन्द्र की बहन तक पहुंची तो उसने समझदारी दिखाते हुए इस बात की जानकारी उसी समय सीएसपी हिना खान को देकर अपने भाई की जान बचाने की अपील की।

मामला गंभीर था इसलिए एसएसपी ग्वलियर को खबर कर सीएसपी सुश्री खान ने उसी समय नरेन्द्र को आफिस बुलाकर उससे पूरी बात की जानकारी लेने के बाद विश्वविद्यालय थाने में आईटी एक्ट और ब्लैकमेलिंग का मामला दर्ज करवा दिया तो वहीं दूसरी तरफ एसएसपी ग्वालियर ने सीएसपी हिना खान के नेतृत्व में विश्वविद्यालय थाना टीआई की एक टीम गठित कर दी।

इस टीम ने तुरंत ही काम शुरु करते हुए साइबर सेल की मदद से उस नंबर की लोकेशन और दूसरी डिटेल निकाली जिससे फोन कर नरेन्द्र को धमकाया जा रहा था। थोड़ी ही देर में जब उस नंबर की जानकारी सामने आई तो नरेन्द्र चौंक गया। वह नंबर किसी और का नहीं बल्कि उसी सुधा चौबे के नाम से रजिस्टर्ड था जिसने खुद होटल का कमरा उसके और नीता के लिए बुक किया था।

यह बात जब पुलिस को पता चली तो पुलिस समझ गई कि सुधा ही इस गिरोह की मास्टर मांइड है जो कॉलेज की लड़कियों को उनके प्रेमियों के साथ पहले तो मस्ती करने होटल भेजती है फिर उनके वीडियो बना कर ब्लैकमेल करती है।

हीना खान सीएसपी

इसलिए पुलिस ने तुरंत ही छापामारी कर सुधा चौबे को गिरफ्तार कर उसके साथ पूछताछ की जिसमें पहले तो वह इस मामले में खुद को निर्दोष बताती रही लेकिन जब पुलिस ने सख्ती की तो सुधा ने अपना अपराध स्वीकार करते हुए बता दिया कि उसने ही अपने प्रेमी भूपेन्द्र धाकड़ और भूपेन्द्र के दोस्त ब्रजेश की मदद से पूरी योजना को अंजाम दिया था। इस पर पुलिस ने मुंरेना में भूपेन्द्र और ब्रजेश के ठिकानों पर दबिश देकर उन दोनों को भी गिरफ्तार कर लिया। पुलिस को तीनों के पास से जब्त किए गए उनके मोबाइल और पैन ड्राइव ने दर्जनों जोड़ों के ऐसे अश्लील वीडियो मिले जो इसी होटल के कमरे में स्पाई कैमरे से शूट किए गए थे जिसे आरोपियों ने कमरे के अंदर लगे बल्ब होल्डर में छुपा का सेट किया हुआ था।

पूछताछ में सुधा और उसके प्रेमी भूपेन्द्र एवं तीसरे आरोपी ब्रजेश ने बताया कि पिछले साल ग्वलियर की एक होटल में ऐसे ही प्रेमी जोड़े का वीडियो बनाकर ब्लैकमेल करने का मामला सामने आया था। इसके बाद सुधा और उसके प्रेमी ने भी इसी तरीके से पैसा कमाने की योजना बनाई। इसके लिए दोनों ने शहर

इन्ही पेन ड्राइव में कैद है अनेक युवतियों के अश्लील विडियो।

भर में घूमकर इस काम के लिए सिटी सेंटर स्थित होटल विराट इन का चयन किया क्योंकि शहर के मध्य में होने के कारण यहां अक्सर युवा जोड़े आकर कुछ घंटो के लिए कमरा लेकर रुका करते थे।

इसके बाद एक रोज सुधा और भूपेन्द्र ग्राहक बनकर होटल के कमरा नंबर 203 में रुके। यहां कुछ देर बाद मिलने के बहाने ब्रजेश पहुंचा फिर तीनों ने मिलकर वल्ब के होल्डर में स्पाई कैमरा छुपा दिया। बाद में ब्रजेश चला गया तो सुधा और भूपेन्द्र ने कैमरे का ऐंगिल चेक किया कि उसमें बिस्तर पर जो कुछ हो

रहा है वह कैद हो रहा है अथवा नहीं। इसमें जब उन्होंने देखा कि कैमरा सही जगह लगा है तो कुछ देर बाद वे भी वहां से कमरा खाली करके चले गए।

कैमरा लगाने के कुछ दिन बाद दोनों फिर आकर इसी कमरा नंबर 203 में रुके और एक नया कैमरा लगाने के बाद पुराना कैमरा निकालकर साथ ले गए। कैमरा चेक करने पर तीनों खुशी से झूम उठे क्योंकि उस कैमरे कई जोड़ो की अश्लील वीडियो कैद हो गई थी जो उस कमरे में आकर रुके थे।

जिनके वीडियो मिले उनसे संपर्क करेगी पुलिस

पुलिस को आरोपियों के मोबाइल और पैन ड्राइव में कई जोड़ों के वीडियो मिले है। आरोपियों के अनुसार इन जोड़ों फोन नंबर न मिल पाने से गिरोह उनसे पैसा नहीं वसूल सका। पुलिस ऐसे जोड़ों से संपर्क कर पता लगाने की कोशिश में है कि क्या उनको भी आरोपियों ने ब्लैकमेल किया है।

अब इन जोड़ों को ब्लैकमेल करने के लिए तीनों को उनके फोन नंबर की जरूरत थी जिसे काफी प्रयास के बाद भी वे हासिल नहीं कर सके। इस पर सुधा ने योजना बनाई कि कालेज के कई जोड़े एकांत कमरे की तलाश में रहते हैं इसलिए वह योजना बनाकर अपनी परिचित लड़कियों को प्रेमी के साथ होटल में जाकर मस्ती करने का ऑफर देने लगी।

किस्मत से बच गई एक शिकार

बताया जाता है कि नीता और नरेन्द्र से पहले सुधा ने एक अन्य सहेली किम ओर उसके प्रेमी अशोक को इसी होटल के इसी रुम नंबर 203 में मस्ती करने भेजा था। लेकिन उस जोड़े की किस्मत अच्छी थी। हुआ यह के रुम बॉय 203 के बजाए 204 नंबर कमरे की चाबी लेकर उन दोनों को कमरे तक छोड़ने गया। गलती समझ में आने पर वह वापस आने लगा तो किम और अशोक ने उसे रोक दिया और 203 के बजाए 204 में मस्ती करने रुक गए इससे उनका वीडियो बनने से बच गया। पूछताछ में आरोपियों ने माना कि उन्होंने एक बाद कमरा नंबर 203 के अलावा 206 नंबर में भी कैमरा फिट किया था।

इसके लिए सुधा खुद उनको वही कमरा बुक करके देती जिसमें कैमरा लगा होता था। यहीं उसने नीता और नरेन्द्र के साथ किया।

नीता और नरेन्द्र अकेले में मस्ती करने के लालच में सुधा के बुने जाल में फंसकर होटल के कमरे में आ गए। जिससे कमरे में उनके बीच जो कुछ हुआ उसका पूरा अश्लील वहीखाता कैमरे में कैद हो गया। जिसे सुधा अगले दिन होटल के इसी कमरे में रुकने के बहाने निकाल कर ले गई। बाद में इसी वीडियो को वायरल करने की धमकी देकर भूपेन्द्र और ब्रजेश ने नरेन्द्र को धमकाकर एक लाख रुपए की मांग शुरु कर दी। जिसमें से 50 हजार रुपया नरेन्द्र ने आरोपियों के बताए बैंक खाते में ट्रांसफर भी कर दिया था लेकिन जब बदमाश बाकी पैसा मांगने पर तुले रहे तो बात पहले नरेन्द्र के भाई और फिर उसकी बहन तक होते हुए सीएसपी हिना खान तक पहुंच गई जिसके बाद बाकी का काम सीएसपी सुश्री खान के नेतृत्व में विश्वविद्यालय थाना टीआई की टीम ने पूरा कर आरोपियों को सलाखों के पीछे पहुंचा दिया।

(आरोपी भूपेन्द्र धाकड़ और ब्रजेश के अलावा सभी नाम परिवर्तित हैं)

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित।